[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2827 **G**

Unique Paper Code : 2055002002

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi-B GE**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) सामने शैलमाला की चोटी पर हरियाली में विस्तृत जल-देश में, नील पिंगल संध्या, प्रकृति की सहृदय कल्पना, विश्राम की शीतल छाया, स्वप्नलोक का सृजन करने लगी। उस मोहिनी के रहस्यपूर्ण नीलजाल का कुहक स्फुट हो उठा। जैसे मदिरा से सारा अंतरिक्ष

P.T.O.

सिक्त हो गया। सृष्टि नील कमलों में भर उठी उस सौरभ से पागल चंपा ने बुधगुप्त के दोनों हाथ पकड़ लिए। वहाँ एक आलिंगन हुआ, जैसे क्षितिज में आकाश और सिंधु का।

अथवा

बाहर बूँदाबाँदी होने लगी थी। कमरे की टीन की छत 'खट-खट' बोलने लगी। लतिका पलंग से उठ खड़ी हुईय बिस्तर को तहाकर बिछायाँ फिर पैरों में सस्लीपरों को घसीटते हुए वह बड़े आइने तक आयी और उसके सामने स्टूल पर बैठकर बालों को खोलने लगी। किंतु कुछ देर तक कंघी-बालों में उलझी रही और वह गुमसुम सी शीशे में अपना चेहरा ताकती रही।

(ख) जीभ को दबाने और चौकसी रखने से यह प्रयोजन नहीं है कि हम सर्वथा मूक भाव धारण कर लें, किन्तु चुप रहने के भी माँके हैं। विद्यावृद्ध, वयोवृद्ध या संसार की अनेक ऊँची-नीची बातों के अनुभव में जो अपने से अधिक हैं उनके सामने शालीनता के ख्याल से चुप रहना होता है जिसमें यह कोई न समझे कि यह छोटे मुँह बड़ी बात कह रहा है। बहुत बकने वालों में कितने ऐसे हैं कि घंटों तक बक जाते है पर उनके बात करने का खास मतलब क्या था, कुछ समझ में नहीं आता।

अथवा

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अंदर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है। परन्तु वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण सिर्फ यही है कि हमारे

भीतर का मशाला तो होता नहीं। हम सिर्फ खाली महल उसके दिखलाने के लिये बनाना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो। सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। अपनी जिन्दगी किसी और के हवाले करो ताकि जिन्दगी के बचाने की कोशिशों में कुछ भी वक्त जाया न हो।

(ग) तो तुम देश के महत्व को नहीं समझीं। तुम्हारे पिता, तुम्हारे दादा और तुम्हारी न जाने कितनी पीढ़ियों ने इस भूमि की रक्षा मे अपना रक्ध्त सींचा है, बहन। कितनी बहनों ने अपने भाइयों को रणभूमि में विसर्जित किया है, कितनी सुंदरियों ने यौवन के प्रभातकाल में पतियों को स्वर्ग का मार्ग दिखाया है। यह एक विजया या एक श्रीपाल का प्रश्न नहीं है- यह देश का प्रश्न है।

अथवा

यह सब अभ्यर्थना निस्स्वार्थ ही नहीं होती थी। सेवा करने वाले भक्तों में वे सभी एक-न-एक वरदान चाहते थे। किसी को बुढ़ौती में पुत्र चाहिए। किसी को और अधिक धन की आवश्यकता थी। कोई अपने पट्टीदार को हराना चाहता था। कोई अपने सगे भाई को विरक्त करने के लिए उच्चाटन मंत्र माँगता था। कोई किसी को वश में करने के साधन का जिज्ञासु था। कोई रेहन रखे हुए खेत को बिना रुपया चुकाये लौटाने का उपाय पूछता था।

2. कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

निबंध का सामान्य परिचय दीजिए।

3. आकाशदीप कहानी की नायिका चंपा की चारित्रिक विशेषतायें लिखिए। (15)

अथवा

नई कहानी के आधार पर 'परिन्दे' कहानी की समीक्षा कीजिए।

4. जबान निबंध के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

सच्ची वीरता निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. मालव प्रेम एकांकी के आधार पर विजया की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

'गुंगिया के माध्यम से महादेवी वर्मा ने स्त्री की दुर्दशा का चित्रण किया है'। स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए-

(i) व्यंग्य

(ii) एकांकी के तत्व (6)